Snehal Sindhu

Monthly Bulletin for Divine Message of Spiritual Relationship, Friendship and Love

Vol. 010 Issue 08 AUGUST 2024 Pages 28 A.S. Rs 100

P.P. Vashibhai's 72nd Birthday celebration at Megaragus Hall, Chandivali-Powai

सत्संग समाचार

✻ गुरुवार, दि. ४ जुलाई को पवई पोलीस स्टेशन के Senior Police Inspector श्री. सीताराम सोनावणेजी 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई पधारे थे। प.पू. भरतभाईने उनका स्वागत किया और मंदिर के बारे में जानकारी दी।

Powai Sr. Police Inspector Shri. Sonawaneji at "Akshardham" Temple, Powai

✻ गुरुहरि काकाजी महाराज के दिव्य मानस सपूत और सभी गुणातीत स्वरुपों एवं हरिभक्तों के लाडले प.पू. वशीभाई का ७२वाँ प्रागट्यदिन चांदिवली के Megaragus Hall में शनिवार, दि. ६ जुलाई को गुणातीत ज्योत से पू. रसीलाबहन और अन्य संतबहनों तथा पू. रसीलाबहन, पू. भारतीबहन और संतबहनें एवं हरिधाम संचालित कांदिवली मंदिर के भक्तों, पवई के स्थानिक स्वीकृत नगरसेवक श्री. श्रीनिवास त्रिपाठीजी, प.भ. के.सी. सिंगजी, प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी एवं करीब ५०० हरिभक्तों की हाजरी में आनंदोत्सव के साथ मनाया गया।

P.P. Vashibhai's 72nd Birthday celebration at Megaragus Hall, Chandivali

शाम को सभा के प्रारंभ में गुणातीत समाज के ध्वजं को लहराते हुए भरतभाई, वशीभाई और संतभाईयों का विशिष्ट रथ द्वारा स्वागत किया गया।

मंच की सजावट वशीभाई CA के रुप में गुरुहरि काकाजी के समय से अब तक आध्यात्मिकता के साथ जो जीवन जी रहे ऐसा दर्शन कराता हुए सजाया गया था।

प्रारंभ में प.भ. मयुरीबहन डोंगरेने विशिष्ट नृत्य करके वशीभाई के चरणों में अपना भाव रखा।

माहात्म्यदर्शन की श्रृंखला में **प.भ. जयभाई मिस्त्री (पेरिस)ने** कहा कि बचपन से ही हमें सत्संग

का जोग मिला। वशीभाई हमेशा वहाँ आते तब ज्यादा नजदिक आने का मौका मिला। उनको गुरु, माता-पिता, दोस्त ऐसे जिस रुप में हमें उन्हें देखना है वैसे हम देख सकते है। जब भी हमारे जीवन जो प्रसंग बनते है उसके मुताबिक वे हमारे साथ हमारे जैसे हो के हमें सहाय करते है। जीवन में आगे बढने के लिये वे हमें अलग-अलग ज्ञान देकर हमारी प्रगति कराते है। मुझे पढाई में ज्यादा रस नहीं था, लेकिन उनके संकल्प और आशीर्वाद से आज मैंने MA की डिग्री प्राप्त कर ली। तो जैसे आपने प्रभु को धारण किया है वैसे हम भी वैसे जीवन जी पाये वही प्रार्थना।

प.भ. ओमभाई मोहिते ने कहा कि वशीभाईने मेरे जीवन में ऐसा कार्य किया है कि मैं औरंगाबाद में था और आज यहाँ मुंबई में Deloitte में नौकरी कर रहा हूँ। उन्होंने हरपल हमें अपने पास रखा और

करोडो रुपये देकर जो नहीं मिलता ऐसा प्रेम हमें दिया है। केवल उनके वचन में हम जीवन जीयेंगे तो हमारी सहज ही प्रगति हो जाती है। मुझे जब भी कोई मूंझवण आती थी वे हमेशा कहते है कि धुन करो, आपका काम हो जायेगा। तो हे वशीभाई, CA तो एक साधन ही है, तो आप ब्रह्मविद्या की स्थिति सहज ही करवा देना वही प्रार्थना।

प.भ. संकेतभाई मेघानंद ने कहा कि वशीभाई ओफिस जाते हो या यहाँ बैठे-बैठे भी छोटे से लेकर बडे हरिभक्तों या स्वरुपों हरेक को वे हरपल याद करते है। वे Universal Saint है। वो वचनामृत ग्रंथ समझाते है तब स्वामी की बातें, गुरुहरि काकाजी के प्रवचन या दुनिया में जो चल रहा है वो हर पल सहज ही सरल उदाहरण देकर बताते है। वो हर चीज हमारे अंदर सहज ही आत्मसात कर देते है।

उनकी अल्प आज्ञा भी हमारा जीवन बदल देती है। मैं १२ साल से उनके और कु. नीताबहन दोशी के साथ MESO में काम कर रहा हूँ। तो मैं हररोज देखता हूँ कि हरेक के साथ उनका अनोखा ही संबंध है। वशीभाई केवल साधु ही नहीं है, लेकिन Great Valuable Diamond है। भरतभाईने एकबार सभा में कहा था कि वशीभाई एक Spotless Diamond है। वे उनके साथ जुडे हरेक युवाओं, हेरतभाई से लेकर जो आज अमेरिका में जो युवक है सभी के जीवन में उन्होंने अनोखा कार्य किया है। योगी डिवाईन सोसायटी के कई काम बाकी थे तो अच्छे से पूर्ण हो इसलिये वे खुद विचरण करते है और कई लोगों से मिलते है। वे केवल हमें जीवन के बारे में ही नहीं, लेकिन मोक्ष ही हमारा अंतिम लक्ष है वह सीखाते है। ऑस्ट्रेलिया की महापूजा की जब तैयारी कर रहे थे तब उन्होंने मुझे सहज ही बोला कि बेटा, १०० से ज्यादा ही महापूजा ले लेना। तब गुरुहरि काकाजी का १०६वाँ प्रागट्यदिन था और १०६ युगल ही समूह महापूजा में बैठे थे। तो ऐसे वे दूरंदेशी साधु है। संतभगवंत साहेबजी कहते है कि जैसे वशीभाई धुन करते है, हमें भी वैसे धुन करने की आदत डालनी चाहिए। वशीभाई हमें हमेशा कहते है कि You cannot fight today's war with yesterday's weapon. कोरोना के समय Digital द्वारा जैसे सत्संग से जुडे रहते थे, वह रीत आज भी चालु ही है। मैं आज गर्व से कह सकता हूँ कि आज हम जहाँ भी है, जो भी पद पर है वो केवल भरतभाई-वशीभाई के संकल्प और आशीर्वाद से ही पहुँच पाये है। तो हम आपको जितना धन्यवाद दे उतना कम है और हमारी कोई भी गलती हुई हो तो हमें माफ करना वही प्रार्थना।

वशीभाई के साथ MESO तथा सद्भाव फाउन्डेशन की संचालिका **कु. नीताबहन दोशी** खास पधारी थी। उन्होंने कहा कि करीब ४१ साल से में उनके साथ जुडी हुई हूँ। तब से एक अनोखी मैत्री तथा भाई-बहन के जैसा संबंध हो गया। दीपशीखा फाउन्डेशन का केन्सर के दर्दीओं के लिये हम घर देख रहे थे तो उस जगह जब हम गये तब ओर एक रुम चाहिए था जो नहीं मिल पा रहा था। वहाँ आकर वशीभाईने धुन की और तुरंत वहाँ के मालिक का फोन आया और वो रुम भी हमें मिल गया। दीपशीखा

P.P. Vashibhai's 72nd Birthday celebration at Megaragus Hall, Chandivali

हो या सद्भाव फाउन्डेशन या योगी डिवाईन सोसायटी हम हर तरह से एक होकर सारे कार्य करते है। मैंने गुरुहरि काकाजी महाराज के भी दर्शन किये है। तो मैं पवई मंदिर में ज्यादा आ नहीं पाती फिर भी इन भाईयों से और योगी डिवाईन सोसायटी से किसी ना किसी तरह से जुडी हुई हूँ। उसके लिये वशीभाई को मैं खास धन्यवाद देती हूँ।

प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी ने कहा कि यहाँ मंच पर जो सजावट की है जिसका विषय है कि वशीभाई यानि CA of Akshardham. गुरुहरि काकाजी महाराजने जो पत्र लिखा था तब उसमें वशीसाहेब लिखा

था। मैंने भी सन् १९७६ में CA का अभ्यास किया था। अगर उस समय मुझे उनकी तालीम मिली होती तो मैं कुछ अलग ही होता। दि. ६ जुलाई, १९५३ को वशीभाई का जन्म हुआ। उस हिसाब से आज उन्हें ७१ पूरे हुए। करीब २० साल की उम्र से साधु का जीवन जीना शुरु कर दिया। उसका उलटा करें तो १७ होता है। तो वो युवानी उनके अंदर सहज ही दिखाई पडती है। यहाँ मंच पर जो भी उनके बारे में लिखा है वो हरेक बात उनके जीवन में सहज ही दिखती है। उनका Vision इतना बडा है जो हम सोच भी नहीं सकते। वशीभाई हरेक बात आध्यात्मिकता के साथ सोचते है। हर बुधवार की सभा के लिये वे तारदेव की ८४ सिडियाँ चढते है। ऐसे देखे तो अब तक १ लाख सिडियाँ उन्होंने चढी है। केवल हमारी प्रगति के लिये वो इतना परिश्रम करते है। तो वशीभाई का स्वास्थ्य हमेशा अच्छा रहे वही प्रार्थना।

हमारे पवई मंदिर के नूतनीकरण के Architect प.भ. मुकेशभाई, प.भ. जयेशभाई और प.भ. संदीपभाई खास पधारे और इस कार्य के लिये BMC की ओर से हमें अनुमति मिल गई, वो अनुमति पत्र भाईओं को अर्पण किया।

P.P. Vashibhai's 72nd Birthday celebration at Megaragus Hall, Chandivali

जलाजा फाउन्डेशन के प.भ. जे.पी. शेट्टीजी ने कहा कि हम हमारा परिवार और दोस्तों के साथ जन्मदिन की पार्टी करते है। लेकिन वशीभाई का जो परिवार यहाँ देखा वह देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। वे केवल संत ही नहीं, लेकिन सच्चे देशप्रेमी भी है। जब देश के प्रति कोई कार्य हो तो जरुर से उसके बारे में मुझसे बातचीत करते है। संकेतभाईने बताया कि वे एक Diamond है, मैं ऐसा मानता हूँ कि वे एक Magnet है। जो उनके साथ जुडता है वो सहज ही उनसे आकर्षित हो ही जाता है, जिसका एक उदाहरण मैं खुद हूँ। जलाजा फाउन्डेशन भरतभाई, वशीभाई और पूरे योगी डिवाईन सोसायटी के साथ करीब १० साल से जुडा है उसके लिये मैं आभारी हूँ।

भरतभाई की प्रेरणा से संतभाईयोंने वशीभाई को उनकी पूरी जीवन यात्रा की अब तक की विशिष्ट स्मृतिओं की १०१ तस्वीरों का आल्बम उनको भेट में दिया।

P.P. Vashibhai's 72nd Birthday celebration at Megaragus Hall, Chandivali

पू. माधुरीबहन ने कहा कि वशीभाई का दिव्य स्पर्श जिसको भी होता है उसका काम होता ही है और वो व्यक्ति उनको कभी भूल नहीं सकता। हम बहुत नसीबदार है कि ब्र.स्व. योगीजी महाराज की मर्जी

P.P. Vashibhai's 72nd Birthday celebration at Megaragus Hall, Chandivali

जानकर गुरुहरि काकाजीने ऐसे पढे-लिखे नेकटाई साधु हमें भेट में दिये। प.पू. गुरुजी हमेशा कहते है कि जब भी इन संतभाईयों के चरण स्पर्श करें तब ऐसा ही माने कि हम काकाजी के पास ही आशीर्वाद ले रहे है। ये भाईयों हमेशा मूर्ति में ही रहते है। जो भी युवक यहाँ आते है, वशीभाई उन्हें बडी पदवी पर पहुँचाने के लिये बहुत अच्छे से तालीम देते है। देह में उनको तकलीफ है फिर भी भक्तों के लिये देह को बिलकुल भी गिने बिना निरंतर विचरण करते रहते है। बाल शिबिर में भी बच्चों को कुछ ना कुछ नया ज्ञान देने सतत जानकारी ढूँढकर उन्हें मार्गदर्शन देते रहते है। तो उनके साथ हमें सेवकभाव ही रखना है। हमारी और उनकी कोई तुलना हो ही नहीं सकती। तो हम कभी भी इन संतभाईयों को नाराज न करें वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने कहा कि वशीभाईने जीवन में अपने लक्ष्य को पकडकर रखा है। 'मैं क्या करने आया हूँ और मुझे क्या करना चाहिए...' इस बात को पकडकर ही वे जीवन जीते है। वे व्यवहारिक दृष्टि से तो बडे है, लेकिन आध्यात्मिकता में उतने ही आगे है। उनमें कुछ गुण हमें सहज ही दिखाई देते है। **(१) सरलता** – वे एकदम सरल होकर भक्तों को मिलते है। अपनापन छोडकर सरल रहना मुश्किल है। **(२) साधुता** – जहाँ भी, जो भी, जैसे भी मिले उसका स्वीकार कर लेना वही साधुता। वशीभाई जहाँ भी जाते है वहाँ कोई व्यवस्था अच्छे से की हो या नहीं भी की होगी तो भी वे घुलमिल जाते है। कभी भी किसी भी बात की अपेक्षा नहीं रखते। हरेक का भला करें, किसीसे बदला न ले, किसीका बुरा न सोचे वही सच्चा साधु होता है। तो ऐसे साधुता के दर्शन उनमें होते है।

प.पू. महंतस्वामीजीने कहा है कि कभी कोई आपकी उपेक्षा करें, खराब बोले फिर भी मन में नहीं रखना। क्योंकि जगत में ७१% पानी है, जो खारा है। फिर भी हमें मीठा पानी मिलता है। तो हमें अच्छी बातें करनेवाले मिलते ही रहेंगे तो हमें वही सुनना चाहिए। आज वशीभाई के जन्मदिन पर हमें कुछ

लेकर जाना है। कोई एक शब्द भी हम लेकर जायेंगे और जीवन में उतारेंगे तो आनेवाले साल में वशीभाई हमें धन्यवाद देंगे। जब हम वशीभाई के लिये ये स्मृतिभेट तैयार कर रहे थे तब ७५ तस्वीरों का ही नक्की किया था। लेकिन जब सभी तस्वीर तैयार कर रहे थे तो वह १०१ हो गये। इसलिये वशीभाई, आपको १०१ साल तक स्वस्थ होकर पृथ्वी पर रहना है और हम भी आपके साथ रहे वही प्रार्थना।

प.पू. दिनकरभाई ने कहा कि करीब पीछले १० दिन से सभी वशीभाई का जन्मदिन मना रहे है। वे गुरुहरि काकाजी के लाडले और भरतभाई के सखा है। ये दोनों भाईयों हमारे सत्संग के आधारस्तंभ समान है। जिनके भी साथ उनका संबंध हुआ वे सभी निहाल हो गये। सभी गुणातीत स्वरुपों के साथ भी वशीभाई का अनोखा संबंध है। वे इतने भक्तिभाव से महापूजा करते है कि उससे अशक्य कार्य भी शक्य हो जाता है। युवाओं को पढाई से लेकर व्यवहार में भी बहुत सहाय करते है। हर हफ्तें तारदेव मंदिर में बुधवार की सभा, शनिवार को वचनामृत ग्रंथ की सभा द्वारा युवकों को सत्संग से जोडकर रखते है। भरतभाई-वशीभाई को धन्यवाद है कि वचनामृत ग्रंथ का इतना गहन संशोधन करके सरल बना देते है। जो भी उनके संबंध में आता है उसे कैसे ब्रह्मरुप करें और काकाजी में जोडे उसके लिये सतत कार्यशील रहते है। तो उनकी सेहत हमेशा अच्छी रहे और पवई के संतभाईयों को हम इस Project में सहाय कर सके वही प्रार्थना।

प.पू. गुरुजी ने कहा कि अनिर्देश की अलगारी विभूति गुरुहरि काकाजी महाराज के लाडले और उनकी Loyal Army के सिपाही तथा मेरे प्रिय ऐसे वशीभाई का प्रागट्यदिन आज हम मना रहे है। काकाजी कहते थे कि हमें पाँच भेद में काम करना है। सालों से वे सत्संग की प्रवृत्ति के साथ MESO में नौकरी करते हुए गुणातीत समाज के सभी उत्सवों में देह को बिलकुल भी गिने बिना शामिल होते है। भगवान को जिसके अखंड जीवन में रखा हो वही ऐसा जीवन जी सकता है। किसी भी प्रसंग, व्यक्ति या पदार्थ के प्रभाव में न आकर पाँच भेद में काम करने की करामत खुद तो रखते है ही, लेकिन सभीको उसी प्रकार जीवन जीने के लिये मार्गदर्शन देते है। यही गुणातीत अवस्था है। वशीभाई की सर्वदेशीयता, सरलता, निखालसता, निर्दोषता सभीको स्पर्श कर जाती है। काकाजी के रुप में हमें वशीभाई जैसी अनुपम भेट मिल गई है। भरतभाई-वशीभाईने काकाजी की रीति से कार्य करते हुए उन्हें आज भी जीवंत रखा है। तो हम सभी एकदूसरे के पूरक बनकर Unified way में Approach करते हुए काकाजीने जो कहा है 'मजियारां हैयां' की राह पर चलते रहे और उनका परिचय बने वही प्रार्थना।

प.पू. वशीभाई ने आशीष बरसाते हुए कहा कि सभी हरिभक्तों का भाव और अपनापन देखकर आँख में आंसू आ जाते है। गुरुहरि काकाजी महाराज का Vision समझना सरल नहीं था। काकाजीने अनुपम मिशन में जो Anoopam Adhesive Factory का कार्य किया उससे कितने बडे-बडे महानुभावों सत्संग से जुड गये और आज भी उतने ही भाव से सत्संग कर रहे है। काकाजी-पप्पाजी को करोडो धन्यवाद है कि शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की सच्ची पहचान करवाके सदा के लिये हमें सनाथ कर दिया। पहले के समय में साधु बनाना सरल नहीं था। आज आनंद से संसार में रहते हुए भी कई युवाओं साधु का जीवन जी रहे है वह मार्ग काकाजी-पप्पाजी के कारण सरल हो पाया। युवकों और अन्य साथीओं को धन्यवाद है कि इतने सारे अन्य कार्य होने के बावजुद भी यहाँ अच्छे से सब व्यवस्था की। गुणगान गाने से जीव ब्रह्मरुप होता है। तो हमें देखकर हर कोई सोचे कि कैसे होंगे काकाजी ऐसा जीवन सहज जी पाये वही प्रार्थना।

प.भ. अनिलभाई मासा के पौत्र और प.भ. मिलनभाई के **पुत्र पू. नीरवभाई** सेवक की दीक्षा ग्रहण कर प.पू. गुरुजी के पास दिल्ली के लिये प्रस्थान कर रहे है, इसलिये विशिष्ट आशीर्वाद लेने खास पधारे थे। इस अवसर पर **प.भ. विशालभाई बिरादरने** अपना जीवन समर्पित करते हुए भरतभाई और वशीभाई के पास सेवक की दीक्षा ग्रहण की।

P.P. Vashibhai's 72nd Birthday celebration at Megaragus Hall, Chandivali

Charity Commosioner श्रीमती सुवर्णा जोशीजी और एडवोकेट श्री. शैलेष जाधवजी तथा अन्य महानुभावों भी खास पधारे थे और उन्होंने वशीभाई को अयोध्या की श्रीराम लल्ला की मूर्ति भी अर्पण की।

पवई की सभी संतबहनों की ओर से विशिष्ट हार वशीभाई को संतभाईयोंने पहनाया।

प.भ. मितेशभाई और सभी युवकोंने पूरे समैये की बहुत अच्छी व्यवस्था की।

पूरे कार्यक्रम का संचालन पू. मननभाईने बहुत अच्छे से किया था।

इस उपलक्ष्य में पवई के Senior Police Inspector श्री. सीताराम सोनावणेजी का भी पुष्पगुच्छ द्वारा संतभाईयोंने अभिवादन किया।

P.P. Vashibhai's 72nd Birthday celebration at Megaragus Hall, Chandivali

P.P. Vashibhai's 72nd Birthday celebration at Megaragus Hall, Chandivali

P.P. Vashibhai's 72nd Birthday celebration at Megaragus Hall, Chandivali

उसी दिन विले पार्ले में प.भ. त्र्यंबकभाई पढियार के घर **संतभगवंत साहेबजी** तथा अनुपम मिशन के भाईयों पधारे थे, तो उनके दर्शन के लिये पवई से प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. राजुभाई, पू. अश्विनभाई और अन्य हरिभक्तों पधारे थे। साथ ही साहेबजीने वशीभाई को उनके जन्मदिन की बधाई और आशीर्वाद भी दिये।

उसी प्रकार ऑस्ट्रेलिया मंडलने भी वशीभाई प्रागट्यदिन भक्तिभाव पूर्वक मनाया।

With SantBhagwant Sahebji at Vile Parle

P.P. Vashibhai's 72nd Birthday celebration at Australia

❊ रविवार, दि ४ अगस्त को संभाजी नगर (औरंगाबाद) में कई हरिभक्तों की हाजरी में उत्साहपूर्वक से प.पू. वशीभाई का तिथि प्रागट्यदिन मनाया गया।

प्रारंभ में एक विशिष्ट मोर के रथ पर भरतभाई, वशीभाई और अश्विनभाई का स्वागत करते हुए युवकोंने भावनृत्य प्रस्तुत किया। वशीभाई का आसन मयुरासन की तरह ही सजाया गया था। इस कार्यक्रम का मुख्य विषय 'एक नये युग' का आरंभ रखा गया था।

माहात्म्यदर्शन की शृंखला में प.भ. आचलबहन. प.भ. गोपालभाई, पू. संदीपभाई, प.भ. चित्राबहनने वशीभाई के विशिष्ट गुणों का स्वानुभाव के प्रसंगो द्वारा बताया।

P.P. Vashibhai's 72nd Birthday celebration at Sambhaji Nagar

पू. अश्विनभाई ने कहा कि पवई के हम सभी संतभाईयों ७० साल से साथ में है। आज तक हमारे बीच कभी भी बिलकुल मनमुटाव नहीं हुआ। गुरुहरि काकाजी महाराजने हम सभी को बहुत प्रेम दिया। वशीभाई महापूजा करते है तो स्वामिनारायण भगवान में इतने लीन हो जाते कि वो प्रगट होते ही है। भक्तों का अच्छा हो उसके लिये वे निरंतर कार्य करते रहते है। आज मंदिर का कार्य हो रहा है वो केवल काकाजी का नाम रोशन हो इसलिये कर रहे है। उनको खुद का कोई स्वार्थ नहीं है। तो हमें केवल वो कहे उतना ही करना है। तो हे वशीभाई! आप राजी हो ऐसा स्वभाव हमारा हो जाये वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने आशीष देते हुए कहा कि योगानुयोग तिथि के मुताबिक वशीभाई का प्रागट्यदिन यहाँ मना रहे है। वशीभाई जहाँ भी जाते है वहाँ खुद की साधुता की सुवास सहज ही फैलाते है। MESO में भी उन्हें सभी स्वामी कहके बुलाते है। ऐसे Diamond के रुप में वशीभाई हमें मिले है। Diamond को जहाँ से भी देखेंगे वह उतनी ही

चमक देता है। वैसे वशीभाई का संबंध सभी के साथ समान ही होता है। जिस कार्य के लिये काकाजीने उन्हें पसंद किया है उनका लक्ष्य केवल उस पर होता है।

जब भी ऐसे गुणातीत संत के संबंध में आते है तो सहज ही हमारे अंदर बदलाव आता ही है। रावण सीताजी को लेकर लंका आया तब उनके साथ शादी करने के लिये बहुत मनाता था, लेकिन सीताजी मानी नहीं। रावण को उसका मित्र मिला और उसने रावण से कहा कि आपके पास ऐसी शक्ति है कि आप रामजी का रुप लेकर सीताजी के सामने जाओ तो वो मान जायेगी। तो रावणने कहा कि वो बात मैंने सोची थी, लेकिन जैसे में रामजी का रुप धारण करता हूँ तो मेरे अंदर के भाव भी बदल जाते है। उसी प्रकार ऐसे संतों के प्रभाव से, संबंध से हमारे अंतर के भाव बदल ही जाते है। हम सत्संग से जुड गये और संत के साथ जुड जाते है तो सहज ही हम ब्रह्मरुप हो जाते है। हमको पता नहीं है कि हमें क्या प्राप्त हुआ है। आज मित्रता का दिन है। काकाजी कहते थे कि Friendliness is Godliness. हमारे अंदर कोई दोष न रहने दे उसे सच्चा मित्र कहा जाता है। शून्य बनने के लिये मैत्रीभाव सबसे सरल साधन है। ऐसी मैत्री हमें सभी के साथ करनी है। तो हे वशीभाई, हम आपके संबंध का महिमा समझे वही प्रार्थना।

प.पू. वशीभाई ने आशीष बरसाते हुए कहा कि गुणातीतानंदस्वामी की दृष्टि मोर पर पडी थी तो वह राष्ट्रीय पक्षी के रुप में आज दुनिया में माना जाता है। वैसे यहाँ मयुर का सुंदर आसन बनाया है। वैसे गुरुहरि काकाजी की दृष्टि हम पर पडी तो निहाल हो गये। भरतभाई-अश्विनभाई के वहाँ कल्पवृक्ष का आसन बनाया है। तो वहाँ जाकर जो कोई भी संकल्प करेंगे वो

P.P. Vashibhai's 72nd Birthday celebration at Sambhaji Nagar

पूरा होगा। हमारा जन्म क्यों हुआ है वो बात हमें समझ लेनी है। सुदामा और श्रीकृष्ण भगवान की मैत्री देखे तो एकने कुछ माँगा नहीं और दूसरेने बिना बताये सबकुछ दे दिया। वो सच्ची मैत्री है। यहाँ ही हमने काकाजी-कांतिकाका मैत्री सुमिरन के रुप में समैया मनाया था। हमारे यहाँ दास का दास बनने की बात होती है। मेरा स्वभाव तो बहुत ही चंचल था। लेकिन काकाजीने व्यवहार में CA की और आध्यात्मिकता में महापूजा करने की आज्ञा करके सबकुछ बदल दिया। हमें गुरु के पास कभी कुछ मांगने की जरुरत ही नहीं है, वो सब देने ही बैठे है। हमें उनकी अनुवृत्ति के मुताबिक जीवन जीना है, तो सहज ही हमारी सफलता होगी। काकाजी कहते थे कि दो जन के साथ मैत्री करो। वैसे हरिभक्तों के साथ हमें आत्मीयता करनी है। सेवक कभी कोई फरियाद नहीं करता वैसे सेवक का जीवन जीते हो जाये वही प्रार्थना।

औरंगाबाद की भाभी मंडलने विशिष्ट हार बनाया था वह हरिभक्तोंने वशीभाई को अर्पण किया

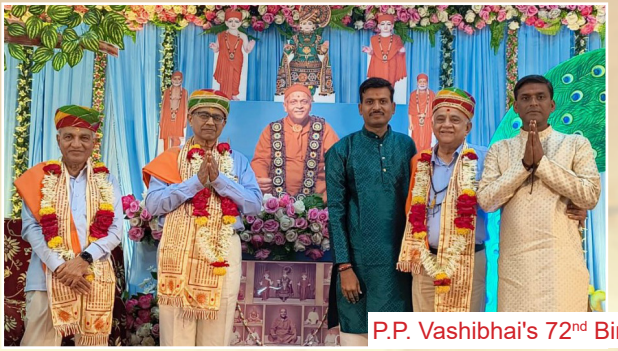

P.P. Vashibhai's 72nd Birthday celebration at Sambhaji Nagar

औरंगाबाद के युवकोंने ७२ भजनों की Video बनाकर वशीभाई को भेट के रुप में अर्पण की।

प.भ. आदर्शभाई अहिरने अपना जीवन समर्पित करते हुए भरतभाई और वशीभाई के पास सेवक की दीक्षा ग्रहण की।

इस उपलक्ष्य में कई महानुभावोंने भाईयों को हार और शाल अर्पण किये।

पूरे कार्यक्रम का संचालन प.भ. नरेशभाई मूलेने अच्छे से किया।

Hari Mandir 17th Patotsav celebration at Sambhaji Nagar

सोमवार, दि. ५ को संभाजी नगर हरि मंदिर का १७वाँ पाटोत्सव संतभाईयों की उपस्थिति में भक्तिभाव से हुआ। ठाकोरजी को विशिष्ट अन्नकूट अर्पण कर सभीने आरती का लाभ लिया। अंत में भरतभाई और वशीभाई के आशीर्वाद प्राप्त हुए।

Hari Mandir 17th Patotsav celebration at Sambhaji Nagar

❊ **रविवार, दि. ७ जुलाई को गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृति में विशिष्ट भजन संध्या चांदिवली के Megaragus Hall में उनके जीवन पर आधारित बात जो दि. ७ जून को प.भ. हेरतभाई वाढेर ने बताई थी उसीको पू. मननभाईने आगे बढाई।**

प.पू. भरतभाई ने कहा कि मेरा और वशीभाई का तो केवल नाम ही है, लेकिन आज तक जो भी कार्य हुआ है और आगे होगा वो सभी संतभाईयों, संतबहनों तथा हरिभक्तों के साथ से ही मुमकीन हुआ है। गुरुहरि काकाजी कहते थे कि **कोई भी कार्य अकेले हाथ से नहीं होता।** वैसे अब हमारे साथ जो भी जुडे है उनके सहकार से सब सरल हो पाया है। हरिभक्तों के साथ से आज पवई मंदिर में जो नूतनीकरण का

Bhajan Sandhya at Megaragus Hall, Chandivali

कार्य चल रहा है वह शक्य हो पाया है। आज तीसरी पिढी काम कर रही है। काकाजी के समय सेवा के लिये यादी बनानी पडती थी, लेकिन आज हमें ऐसा कुछ भी करना नहीं पडता। हरिभक्तों सामने से बिना कहे सेवा दे जाते है। पवई में आगे भी जो कार्य होगा केवल भक्तों के सहकार से और सभी गुणातीत स्वरुपों के आशीर्वाद से सहज ही सफल होगा। अगर भावना सच्ची होगी तो भगवान आ के काम करते है। ऐसे गुणातीत स्वरुपों के स्मृति चरित्र में ज्यादा से ज्यादा डूबे वही प्रार्थना।

❊ शुक्रवार, दि. १२ जुलाई प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई सांकरदा के पू. आचार्यस्वामीजी की सेहत अच्छी न होने के कारण पप्पाजी तीर्थ में उन्हें खास मिलने पधारे थे। वहाँ पू. विज्ञानस्वामीजी, पू. धर्मनंदनस्वामीजी को भी मिले। उसके बाद अनुपम मिशन में संतभगवंत साहेबजी के साथ सत्संग किया। फिर गुणातीत ज्योत में प.पू. हंसादीदी को भी खास मिले।

Saint Brothers with P. Aacharyaswamiji

Saint Brothers at Pappaji Tirth

Saint Brothers at Gunati Jyot, Vidhyanagar

Saint Brothers at Anoopam Mission, Mogri

❊ **सोमवार, दि. १७ जुलाई को पवई के संतभाईयों प.पू. गुरुजी के साथ पवई के मशहूर बिल्डर श्री. निरंजन हिरानंदानी को मिलने गये थे। पवई मंदिर के नूतनीकरण में वे हमें पूर्णरुप से अच्छा सहकार देंगे ऐसी भावना उन्होंने व्यक्त की। हमारे मंदिर की प्रवृत्ति जानकर वे पहले से ही काफी प्रभावित थे और उन्होंने गुरुजी से आशीर्वाद भी प्राप्त किये।**

With Shri. Niranjan Hiranadani at Powai

❊ **बुधवार, दि. १७ जुलाई के चातुर्मास के मंगलपर्व पर प.पू. गुरुजी, पू. सुहृदस्वामीजी और संतों तथा सभी संतबहनें तथा हरिभक्तों के साथ 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई पधारे थे। गुणातीत ज्योत से पू. प्रवीणाबहन और संतबहनें भी पधारे थे।**

प.पू. भरतभाई ने कहा कि आज नियमी एकादशी के पवित्र अवसर पर गुरुजी यहाँ पधारे वह सबसे ज्यादा खुशी की बात है। ३० हरिभक्तों के साथ इस उम्र में गुरुजी मुंबई में विचरण कर रहे है वह सामान्य बात नहीं है। गुरुपूर्णिमा आ रही है, उसके आशीर्वाद हमें आज ही गुरुजी से मिलेंगे। जिस पर गुरु शासन करें, गुरु की मर्जी को जाने वही सच्चा शिष्य होता है। गुरुहरि काकाजी महाराज हमेशा कहते थे कि हमें सच्चे गुरु

P.P. Guruji at "Akshardham" Temple, Powai

मिल ही गये है, लेकिन हमें सच्चा शिष्य बनना है। हमें हमारे गुरु के पास हमेशा शून्य बनकर रहना चाहिए। गुरु अगर हमें डाटेंगे तो भी हमारे हित ही करेंगे। हमें गुरुरुप हो जाना है। तो आज गुरुजी हम सभी पर गुरुपूर्णिमा का विशिष्ट आशीष बरसाये वही प्रार्थना।

प.पू. गुरुजी ने आशीष देते हुए कहा कि हमें भरतभाई को कम नहीं समझना चाहिए। उसका मतलब गुरुहरि काकाजी महाराज को अखंड प्रगट रखें हुए, उन्हें धारण किये हुए विरल विभूति यानि भरतभाई। ये बात हमें कभी भी भूलना नहीं है। काकाजी हरपल, हर समय और हर स्थिति में उनमें प्रगट है। हम खाना खाते है जिससे शरीर की पुष्टि होती है। भरतभाई खाना खाते है तब वह खाना जठराग्नि में जाकर ब्रह्माग्नि तक पहुँचने से ब्रह्ममय बन जाता है। यह बात बुद्धि में समझमें आये ऐसी नहीं है। लेकिन पुराने संतोंने भी यही बात की है। ऐसे बडे संत देनेवाले, खानेवाले और अर्पण करनेवाले को भी ब्रह्मस्वरुप बना देते है। काकाजी कहते थे कि महाराजने ऐसा धूधूबाज मार्ग निकाला है। हमें कोई साधन नहीं करना पडा। भरतभाई बहुत अच्छे है। बस यही बात पकडकर रखने में हमारा क्या जाता है? तो ये गुण हमें केवल बुद्धि

P.P. Guruji and group at "Akshardham" Temple, Powai

में नहीं, लेकिन हृदय से उसका स्वीकार करना है। भरतभाई-वशीभाई का हमारे भीतर में ऐसा गुण दृढ हो जाये कि ऐसे संतों कही भी नहीं है, हमें जो मिले वही सर्वोपरि है। ऐसा मानकर उनका सेवन करना है। उनकी मर्जी में आँख बंद करके आगे बढते रहना है। तो गुरुपूर्णिमा के अवसर पर यही प्रार्थना करनी है कि भरतभाई-वशीभाई और उनके साथ जो जुडे है उनपर कभी भी शंका ना करें।

❊ शनिवार, दि. २० जुलाई को योगी डिवाईन सोसायटी, रोटरी कलब और सद्भाव फाउन्डेशन की ओर से कु. नीताबहन दोशी गोवंडी के म्युनिसिपल स्कूल में Mats के वितरण में सहभागी हुए।

साथ ही दिपशीखा फाउन्डेशन में करीब २० महिलाओं का Breast Cancer Screening का कार्य हुआ, जिसमें बिना स्पर्श किये केन्सर के सभी टेस्ट होते है।

Breast Cancer Screening

Mats distribution at Govandi

❊ रविवार, दि. २१ जुलाई को गुरुपूर्णिमा का अवसर 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में अत्यंत श्रद्धा और भक्तिभाव से मनाया गया। सुबह में प.पू. वशीभाईने महापूजा में विशिष्ट संकल्प किया और सभीके सुखाकारी के लिये एवम् पवई मंदिर के नूतनीकरण के कार्य हेतु खास प्रार्थना भी की।

Gurupurnima celebration at Powai

प.पू. वशीभाई ने कहा कि सहजानंदस्वामी को बहुत धन्यवाद देते है कि वे गुणातीतानंदस्वामी को पृथ्वी पर लेकर आये। सबसे बडी स्थिति यानि गुणातीत होना। उससे भी आगे गुरुहरि काकाजी-गुरुहरि पप्पाजी को धन्यवाद है कि शास्त्रीजी महाराज-योगीजी महाराज की सही पहचान कराके गुरु की सच्ची बात हमें समझाई। हम हमेशा गुरु में गलती देखते है। कुछ ना कुछ उनके पास मांगते ही रहते है। तो उससे अब बाहर निकलना है। हमें गुरु जीवन कैसे जीना उसकी हमेशा तालीम देते है। हमें हमारी सोच को गुरु की सोच के साथ जोड देना है। तब उनकी अनुवृत्ति सहज ही समझमें आ जाती है। गुरु हमारे शिल्प का घडतर करता है। हमें तीन बात समझनी है। **(१) हमें निर्वासनिक होना है। (२) सेवा और आज्ञापालन (३) संत की सच्ची पहचान करना।** काकाजीने स्वरुपयोग के रुप में हमें ४ Point Programme दिया। तो हम गुरुने जो मार्ग दिखाया है उस पर चलते रहे वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने आशीष देते हुए कहा कि आज के दिन सभी हरिभक्त दूर-दूर से अपने गुरु का पूजन करने आते है। दो दिन गुरु के लिये होता है

– गुरुपूर्णिमा और गुरु का प्रागट्यदिन। गुरुपूर्णिमा के दिन गुरु शिष्य के पास गुरुदक्षिणा मांगते है। गुरु, सद्गुरु और परमगुरु। ऐसे तीन तरह से माना जाता है। **(१) गुरु** – गुरु बहुत प्रकार के होते है। जो हमें ज्ञान देते है, अंधकार को दूर करते है वह गुरु होता है। गुरु सफलता में हमें आगे लेकर जानेवाले सीडी समान होते है। **(२) सद्गुरु** – गुणातीत को सद्गुरु कहा जाता है। जब कोई संत उच्च स्थिति की प्राप्त करते है उन्हें सद्गुरु माना जाता है। वो हमको गुणातीत स्थिति प्राप्त करवाते है। जो संत अंत तक अपने साथ रहे वही संत होता है। ऐसे गुणातीत संत हमारा हाथ कभी नहीं छोडते। **(३) परमगुरु** – ऐसे सद्गुरु हमें परमगुरु परमात्मा से जोडते है। तो हमें केवल शिष्य बनकर गुरु का सेवन कर लेना है। गुरुहरि काकाजी कहते थे कि ये हमारी 'आजा–फसाजा कंपनी' है। जो इसमें आ गया वो वापस जा नहीं सकता। गुरुपूर्णिमा के अवसर पर काकाजी हमेशा परदेश में विचरण के लिये जाते थे। इसलिये गुरुपूर्णिमा के आशीष वे पत्र द्वारा हमें भेजते थे। उसके बाद उन्होंने दिये हुए गुरुपूर्णिमा के विशिष्ट आशीर्वाद पढा।

Gurupurnima celebration by Yoga team

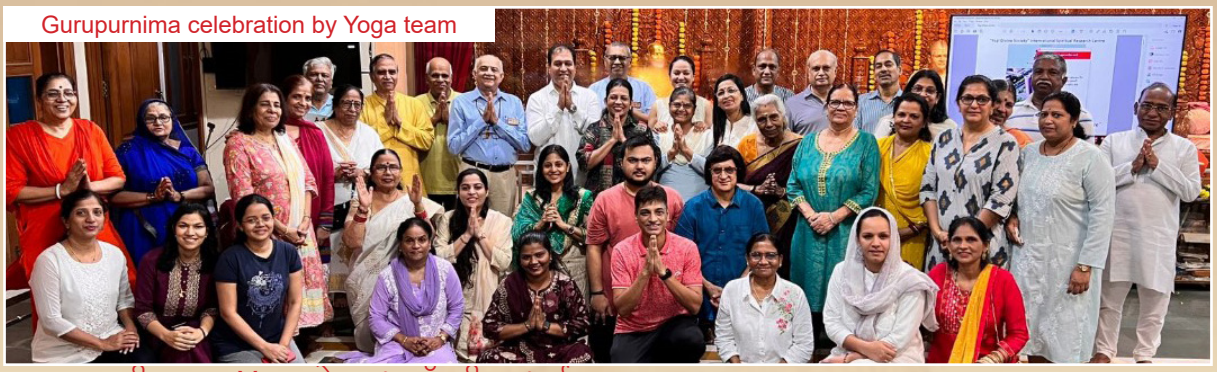

उसी प्रकार Yoga के प.भ.डॉ. दीपकभाई तथा अन्य शिक्षकों और विद्यार्थीओंने भी संतभाईयों का पूजन कर गुरुपूर्णिमा का पर्व मनाया।

❊ सोमवार, दि. २२ जुलाई हिंडोला के पावन अवसर पर 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में विशिष्ट फूलों द्वारा स्वामिनारायण भगवान का हिंडोला सजाया गया था।

❊ सोमवार, दि. २२ जुलाई को प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. राजुभाई, पू. अश्विनभाई और पू. हितेनभाई विले पार्ले में प.भ. वालजीभाई के घर पू. सत्स्वामीजी तथा अन्य संतों को खास मिलने पधारे थे।

Hindola at "Akshardham" Temple, Powai

With P. Satswamiji at Vile Parle

❊ मंगलवार, दि. २३ जुलाई को हरिधाम से पू. आनंदस्वरुपस्वामीजी, पू. विरलस्वामीजी और अन्य सेवक हरिभक्तों 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई पधारे थे।

P. Aanadswamiji and P. Viralswamiji at "Akshardham" Temple, Powai

❊ मंगलवार, दि. २३ जुलाई को शिकागो के हरिधाम मंदिर में प्रथम पाटोत्सव विधि में प.पू. प्रेमस्वरुपस्वामीजी और संतों तथा प.पू. दिनकरभाईने खास हाजरी दी थी। साथ ही उन्होंने विधि के साथ आरती करके सभीको आशीर्वाद भी दिये थे।

❊ शुक्रवार, दि. २६ जुलाई को Columbus के मंदिर में मूर्तिप्रतिष्ठा निमित्त प.पू. प्रेमस्वरुपस्वामीजी और प.पू. दिनकरभाईने महापूजा में भाग लिया था।

Murtipratishtha Mahapooja at Columbus

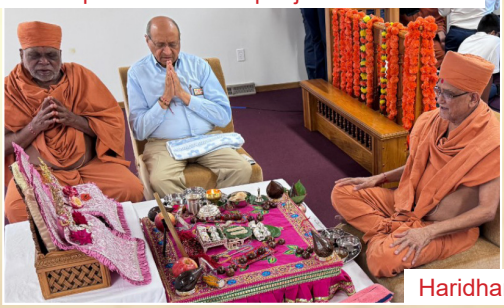

Haridham Temple Patotsav at Chicago

॥ સ્વામિશ્રીજી ॥

❊ ગુરુપૂર્ણિમા ❊

તા. ૨૧/૭/૨૦૨૪, રવિવાર,
અષાઢ સુદિ પૂનમ

પરમ ભક્ત સર્વ દિવ્ય હરિભક્તો,

ગુરુપૂર્ણિમાના શુભ અવસરે સહુને જય શ્રી સ્વામિનારાયણ...

આજના શુભ મંગલકારી દિને ગુરુદેવના ચરણોમાં પ્રાર્થનારૂપે આંતરપૂજા કરીને પ્રાર્થના અર્પણ કરીએ છીએ.

હિંદુ સંસ્કૃતિમાં ગુરુપૂર્ણિમાનું અદ્‌ભુત માહાત્મ્ય શાસ્ત્રમાં જણાવેલ છે. આ શુભ દિને દરેક મુમુક્ષુ પોતાના ગુરુના સાન્નિધ્યે જઈ પૂજન કરવા ઇચ્છે છે.

સાચા ગુરુ બાહ્યપૂજા કરવા કરતાં આંતરપૂજા ઇચ્છે છે. વચનામૃત ગઢડા મધ્ય ૩૩ પ્રમાણે 'જેને નિષ્કામી વર્તમાન દૃઢ હોય તો તે થકી અમે હજાર ગાઉ છેટે જઈએ તો પણ તેની પાસે જ છીએ; અને જેને તે નિષ્કામી વર્તમાનમાં કાચ્યપ છે ને તે જો અમારી પાસે રહે છે તોય પણ તે લાખ ગાઉ છેટે છે.'

તો આજના મંગલકારી દિવસે બે વાત સહજ જ જીવનમાં ઊતરે તેવા દૃઢ સંકલ્પ સાથે સાચા અર્થમાં ગુરુપૂર્ણિમા ઊજવીએ.

ગુરુહરિ કાકાજી મહારાજે એક પત્રમાં જણાવ્યું છે કે 'ગુરુ કરતા પહેલાં તેનો પૂરો ઝયતકિંરો. ગુરુને Nitric Acidમાં નાંખો. પણ ત્યારબાદ તેમાં ક્યારેય સંશય ન કરવો.' કાકાજીએ કહ્યું છે કે આપણને તો સાચા સદ્‌ગુરુરૂપ ગુણાતીત ગુરુ મળ્યા છે. આપણે માટે ગુરુ સાચા છે, તેમાં કોઈ સંશય નથી. જે કસર છે તે શિષ્યની છે. તે ટાળવા માટે આજે ગુરુચરણમાં એ કસર ઓળખી સાચા શિષ્ય બનવાની દૃઢતા કરવાની છે.

શાસિતુમ્ યોગ્ય ઈતિ શિષ્યઃ...

પહેલી વાત – જેના ઉપર ગુરુ શાસન કરે તે સાચો શિષ્ય. આપણે એવા શિષ્ય થયા? અંતર્દૃષ્ટિ કરી વિચારીએ. કોઈપણ પ્રસંગે ગુરુએ આપણને સાચવવા પડે તો ક્યાં શિષ્ય થયા? ગુરુને કંઈપણ કહેતાં સંકોચ થાય કે રખે એને મારો અભાવ આવશે, દિવ્યભાવ ભંગ થશે, તો આપણે ક્યાં શિષ્ય થયા? ગુરુનો અભાવ આવે, એમને નિર્દોષ ન મનાય, એમનામાં દોષ પરઠાય, તો સાચા શિષ્ય ક્યાં થયા?

બીજી વાત – ગુરુરૂપ થઈને ગુરુની મરજી સમજી જીવવું, અનુવૃત્તિમાં વર્તવું. ગુરુની આંખ ફરકે ને શિષ્યનો દેહ ફરકે. એવી દિવ્ય દૃષ્ટિ પ્રાપ્ત કરવાની છે... એ સાચું ગુરુપૂજન...

આજસુધીના આપણા સર્વ ગુણાતીત ગુરુઓનાં જીવન ચરિત્રો નિહાળીએ. ગુણાતીતાનંદસ્વામી, ભગતજી મહારાજ, જગાસ્વામી, કૃષ્ણજી અદા, શાસ્ત્રીજી મહારાજ, યોગીજી મહારાજ, કાકાજી મહારાજ, પપ્પાજી મહારાજ, હરિપ્રસાદસ્વામીજી, અક્ષરવિહારીસ્વામીજી, સાહેબદાદા, દિનકરભાઈ, ગુરુજી, પ્રેમસ્વરૂપસ્વામીજી, સોનાબા, શાંતાબેન, જ્યોતિબેન, તારાબેન, હંસાદીદી, દેવીબેન, પ્રેમબેન, યોગિનીબેન, આનંદીદીદી વિગેરેનાં જીવનમાં ડૂબીએ તો આ બે વાતોનું તેમનામાં સહજ દર્શન થશે અને આપણું જીવન પણ ગુરુરૂપ બની જશે.

સર્વને આ પ્રાપ્તિ સુલભ થાય એ માટે ગુરુહરિ કાકાજીએ ભજન–ધ્યાન–પ્રાર્થના–સત્કર્મરૂપી 4 Point Programme નિત્ય કરવા કહ્યું છે. તો એને અનુસરીએ અને એમની મરજીના મરજીવા બની સાચી ગુરુદક્ષિણા અર્પણ કરીએ... એ જ અભ્યર્થના...

લિ. આપના જ
ભરતભાઈ, વશીભાઈ અને સંતભાઈઓ, સંતબહેનો તથા મુક્તસમાજના ભાવસભર
જય શ્રી સ્વામિનારાયણ.

અક્ષરધામ ગમન

પપ્પાજી તીર્થમાં રહેતા વડીલ સંતવર્ય પૂ. આનંદપ્રસાદસ્વામીજી (આચાર્યસ્વામીજી) લગભગ ૨૫ વર્ષ સુધી અદ્‌ભુત સેવા સત્સંગનો લાભ આપી ગુરુવાર, તા. ૧૮ જુલાઈએ ૭૯ વર્ષની ઉંમરે છેલ્લા ચાર મહિનાની માંદગી ભોગવી ભગવાન સ્વામિનારાયણ, ગુરુહરિ પપ્પાજી તથા સહુ સંતો–મુક્તોને સંભારતા સુખે સુખે સ્વધામ સિધાવ્યા.

તેમનો જન્મ તા. ૧૨ એપ્રિલ, ૧૯૪૬માં પ.ભ. નરસિંહદાસ પરસાણિયાના ઘરે થયો હતો. તે વખતે તેમનું નામ મોહનભાઈનું પાડવામાં આવ્યું હતું. નાનપણથી જ તેઓ બ્ર.સ્વ. યોગીજી મહારાજના જોગમાં હતા અને માણાવદરમાં પૂ. દેવશીબાપા અને પૂ. હરિભાઈ સાહેબ દ્વારા સત્સંગમાં જોડાઈ ગયા હતા. એમની સાથે સત્સંગની પ્રવૃત્તિ કરતા બ્ર.સ્વ. યોગીજી મહારાજના સંકલ્પે પોતાનું જીવન એમને સમર્પિત કરવાનું નક્કી કર્યું. ૧૮ વર્ષની યુવા વયે બોચાસણ મંદિરમાં પાર્ષદી દીક્ષા લીધી. ત્યારબાદ અટલાદરામાં બ્ર.સ્વ. શાસ્ત્રીજી મહારાજની જ્યાં શતાબ્દી વખતે તેમણે ભાગવતી દીક્ષા ગ્રહણ કરી અને તેમને સાધુ આનંદપ્રસાદદાસજી નામ ધારણ કર્યું. પછી તો દાદર, સોખડા, સાંકરદા એમ દરેક સ્થાને પ્રભુએ જેમ રાખ્યા તેમ રહી બ્ર.સ્વ. અક્ષરવિહારીસ્વામીજીને યોગીબાપાનું સ્વરૂપ માની રાજીપો પ્રાપ્ત કરી લીધો. સાંકરદા મંદિરે રહી સત્સંગની પ્રવૃત્તિ હેઠળ ગામોગામ સત્સંગ વિચરણ કરતા જ રહેતા. જેનાં ફળસ્વરૂપે પ્રત્યક્ષની નિષ્ઠાવાળા સત્સંગી સમાજનો એક સમૂહ, તેમણે પોતાની હયાતિ દરમ્યાન તૈયાર કરીને અક્ષરવિહારીસ્વામીજીનાં ચરણે સમર્પિત કર્યો.

ગુરુહરિ પપ્પાજીની આજ્ઞા અને મરજી જાણીને મોગરી ગાના રોડ ઉપર આવેલ પપ્પાજી તીર્થ નામે જમીનનો સર્વાંગી વિકાસ કરતા કરતા આજુબાજુનાં ગામોના બધા મુમુક્ષુ ભક્તોને સ્વામિનારાયણ ભગવાનમાં જોડ્યા. પપ્પાજીએ આચાર્યસ્વામીજીને સદ્‌ગુરુની પદવી આપી હતી.

સમગ્ર ગુણાતીત સમાજના દરેક કેન્દ્રો અને વડીલ સંતો–મુક્તો સાથે તેમને આગવો સંબંધ હતો અને ક્યારેય પણ કોઈપણ પ્રકારની ભેદદૃષ્ટિ વગર સહુ સાથે આત્મીયતાથી રસબસ થતા.

તેઓ ખૂબ જ વિચક્ષણ, બહુમુખી, મેધાવી પ્રતિભા સંપન્ન હતા. તેમને નકામી વસ્તુમાંથી નવું સર્જન કરવાની અદ્‌ભુત સૂઝ હતી. નાના–મોટા ઉત્સવો, સમૈયા, શિબિરમાં તેમની આ કળાથી સહુ ખૂબ પ્રભાવિત થતા. યુવાપેઢીના તેઓ આદર્શ સમા હતા. દેહની આવી તકલીફ હોવા છતાં તેઓ સતત ધુન–ભજન–સ્મરણમાં નિમગ્ન રહેતા. તેમની નાદુરસ્ત તબિયત દરમ્યાન ગુણાતીત જ્યોતનાં બહેનોની ભક્તિસભર સારવાર હેઠળ ગુણાતીત પ્રકાશના સર્વે ભાઈઓએ તેમની મહિમાથી સેવા કરી હતી.

છેલ્લે છેલ્લે તેમની બીમારી વખતે અનુપમ મિશનથી સંતભગવંત સાહેબજી અને સર્વે સંતભાઈઓ, કંથારિયાથી પૂ. વિજ્ઞાનસ્વામીજી, હરિધામથી પૂ. દાસસ્વામીજી અને સંતો, સાંકરદાથી પૂ. બાપુસ્વામીજી અને સંતો, પવઈથી પ.પૂ. ભરતભાઈ, પ.પૂ. વશીભાઈ તથા ગુણાતીત સમાજનાં સર્વ કેન્દ્રોમાંથી સંતો, સંતભાઈઓ, મુક્તો ખાસ એમને મળવા આવ્યા હતા.

તેમના પાર્થિવ દેહને પપ્પાજી તીર્થ, ગુણાતીત જ્યોત, કંથારિયા મંદિર, સાંકરદા મંદિરની પ્રદક્ષિણા કરાવી છેલ્લે હરિધામ મંદિરે વિશિષ્ટ સ્થાને તેમની અંત્યેષ્ટિ માટે લઈ ગયા હતા. ત્યાં પણ સાહેબજી અને સર્વે કેન્દ્રના સંતો–મુક્તોએ હાજરી આપી હતી.

તા. ૨૦ અને ૨૧ જુલાઈના તેમની સ્મૃતિમાં વિશિષ્ટ પારાયણનું પણ આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું.

તા. ૨૮ જુલાઈના પપ્પાજીના શાશ્વત સ્મૃતિ દિને તેઓની ત્રયોદશીની મહાપૂજા પપ્પાજી તીર્થ પર 'પ્રાણેશ સંત' નિવાસમાં રાખવામાં આવી હતી. પવઈના સંતભાઈઓ વતી પૂ. મનનભાઈ મર્ચન્ટ, પૂ. સંદીપભાઈ દેશપાંડે, પૂ. હર્ષિતભાઈ લાડ અને પ.ભ. પિયુષભાઈ મિશ્રા ખાસ પધાર્યા હતા. પૂ. ઈલેશભાઈ અને ગુણાતીત પ્રકાશના ભાઈઓએ ભક્તિ અને વિધિપૂર્વક મહાપૂજા કરી હતી. વેરાખાડી મહીસાગરમાં તેમનો અસ્થિકુંભ વિસર્જિત કરી સહુએ અશ્રુ ભીની આંખે વિદાય આપી હતી.

આચાર્યસ્વામીજી જેવી નિષ્ઠા, સેવા, સમર્પણ, સર્વદેશીયતા આપણા સહુમાં યત્‌કિંચિત્ આવે એવી ભગવાન સ્વામિનારાયણ, ગુરુહરિ પપ્પાજી, ગુરુહરિ કાકાજી તથા સર્વે ગુણાતીત સ્વરૂપો અને મુક્તસમાજને પ્રાર્થના.

❋ ❋ ❋

ઈશ્વરી ન્યાય !

સર્વે મુક્તસમાજને જય શ્રી સ્વામિનારાયણ...

હાલમાં જ તા. ૨૬ એપ્રિલથી તા. ૧૧ ઑગસ્ટ દરમ્યાન Parisમાં યોજાયેલ ગ્રીષ્મ Olympic રમતોત્સવના સંદર્ભે એક બહુ જૂનો પણ ખૂબ જ પ્રેરણાદાયી કિસ્સો પ્રકાશમાં આવ્યો છે. તેમાં રમતોત્સવનું તો નામ નથી, પણ તેમાં જે રમતવીરોએ અદ્‌ભુત ખેલદિલી, ખાનદાની ને નીતિમતાના માપદંડોના આદર્શ આપ્યા છે તે ખરેખર પ્રશંસનીય અને પ્રેરણાદાયી છે.

ચારસો મીટરની રેસમાં કેન્યાનો રનર અબેલ મુત્તાઈ સહુથી આગળ હતો. ફિનિશિંગ લાઈનથી ચાર–પાંચ ફૂટની દૂરી પર એ અટકી ગયો. એને લાગ્યું કે આ દોરેલા પટ્ટા જ ફિનિશિંગ લાઈન છે અને મૂંઝવણમાં અને ગેરસમજમાં એ ત્યાં જ અટકી પડ્યો. તેની પાછળ બીજા નંબરે દોડી રહે સ્પેનિશ રનર ઈવાન ફર્નાન્ડિઝ એ આ જોયું અને તેને લાગ્યું કે આ કંઈક ગેરસમજ છે. તેણે પાછળથી બૂમ પાડી અને મુત્તાઈને કહ્યું કે 'તું દોડવાનું ચાલુ રાખ.'

પરંતુ મુત્તાઈને સ્પેનિશ ભાષામાં સમજ ના પડી. આ આખો ખેલ માત્ર ગણતરીની સેકંડનો હતો. સ્પેનિશ રનર ઈવાને પાછળથી આવી અને અટકી પડેલા મુત્તાઈને જોરથી ધક્કો માર્યો ને મુત્તાઈ ફિનિશ રેખાને પાર કરી ગયો.

આ રેસ હતી અંતિમ પડાવ પૂરો કરી વિજેતા બનવાની. ફિનિશ રેખા પાસે આવીને અટકી પડેલા મુત્તાઈને અવગણીને ઈવાન વિજેતા બની શકત. આખરે વિજેતા મુત્તાઈને ગોલ્ડ મેડલ મળ્યો અને ઈવાનને સિલ્વર.

એક પત્રકારે ઈવાનને પૂછ્યું કે 'તમે આમ કેમ કર્યું? તમે ધાર્યું હોત તો તમે જ જીતી શકત. તમે આજે ગોલ્ડ મેડલને હાથથી જવા દીધો.'

ઈવાને સુંદર જવાબ આપ્યો કે 'મારું સ્વપ્ન છે કે ક્યારેક આપણે એવો સમાજ બનાવીએ જ્યાં વ્યક્તિ બીજા વ્યક્તિને ધક્કો મારે, પરંતુ પોતે આગળ જવા માટે નહીં, પણ બીજાને આગળ લાવવા, મદદ કરવા, એની શક્તિને બહાર લાવવા ધક્કો મારે. એવો સમાજ જ્યાં એકબીજાને મદદ કરી બન્ને વિજેતા બને.'

પત્રકારે ફરીથી પૂછ્યું, 'તમે એ કેન્યન મુત્તાઈને કેમ જીતવા દીધો? તમે જીતી શકત.'

જવાબમાં ઈવાને કહ્યું, 'મેં એને જીતવા નથી દીધો. એ જીતતો જ હતો. આ રેસ એની હતી અને છતાં જો હું એને અવગણીને ફિનિશ લાઈન પાર કરી જાત તો પણ મારી જીત તો કોઈ બીજા પાસેથી પડાવેલી જીત જ હોત ને? આ જીત પર હું કેવી રીતે ગર્વ કરી શકત? આવો જીતેલો ચંદ્રક હું મારી માને શી રીતે બતાવી શકું? હું મારા અંતરાત્માને શું જવાબ આપું?'

સંસ્કાર અને નીતિમત્તા એ વારસામાં મળેલી ભેટ છે. એક પેઢીથી બીજી પેઢીને મળતો વારસો છે. આમ થાય અને આમ ના જ થાય. આ જ પુણ્ય અને પાપ છે. આ જ ધર્મ છે. આપણે જ નક્કી કરીશું કે કાલનો સમાજ કેવો હશે? નીતિમત્તા અને સંસ્કારના કોઈ ઈન્જેકશન કે ટેબ્લેટ નથી આવતી.

જીતવું મહત્વનું છે, પણ કોઈ ભોગે જીતવું એ માનસિક પંગુતા છે. કોઈનો યશ ચોરી લેવો, કોઈની સફળતા પોતાને નામ કરવી, બીજાને ધક્કો મારી પોતે આગળ આવવાનો પ્રયત્ન. આ બધું કદાચ થોડી ક્ષણો માટે જીતી ગયાનો ભાવ અપાવે પણ ખુશી નહીં અપાવે. કારણ કે અંતરમન અને અંતરઆત્મા તો સાચું જાણે છે.

આ સુંદરતા, પવિત્રતા, આદર્શ, માનવતા અને નીતિમત્તાને આગળ ધપાવીએ. બીજી પેઢીમાં પ્રામાણિકતા અને નીતિમત્તાનાં બીજ રોપીએ.

આ જ પ્રસંગની સામે આપણે હાલ સંપન્ન થયેલી Paris Olympicની સરખામણી કરીએ.

ભારતની કુસ્તીબાજ **શ્રીમતી વિનેશ ફોગાટના** અથાગ પ્રયત્ન પછી પણ તે સંભવિત સુવર્ણચંદ્રકથી વંચિત રહી ગઈ. કારણ કે તેનાં વજનનાં છેલ્લાં પરિક્ષણમાં તેનું વજન ૧૦૦ ગ્રામ વધુ હોવાથી તેને રમતની પ્રતિયોગિતામાં અંતિમ રાઉન્ડ માટે રતબાદલ કરવામાં આવી. વિનેશ માટે આ ખૂબ જ મોટો આંચકો હતો અને સ્વાભાવિક રીતે ભારતમાં બધાંને જ Olympic Committeeના આ નિર્ણય માટે ખૂબ જ આક્રોશ અને દુઃખ થયું. CAS (Court of Arbitration for Sport) માં આની ફેરવિચારણા માટે વિનેશને કંઈ નહીં તો Silver Medal માટે પણ મોટા–મોટા વકીલોને રોકીને ભલામણ કરવામાં આવી. પરંતુ તેઓએ એમ કહીને એ અપીલ ફગાવી દીધી કે આવી રીતે એક જ પ્રતિયોગિતા માટે બે Silver Medal આપી શકાય નહીં. આમ વિનેશ ફોગાટને ખાલી હાથ પાછા ફરવું પડ્યું. પરંતુ આ ઘટનાક્રમની પાછળનો ઈતિહાસ કદાચ જો આપણે જાણીએ તો કુદરતે કરેલા ન્યાયનો આપણને અંદાજ આવી જશે.

હકીકત એમ હતી કે Olympic રમતમાં ભાગ લેતાં પહેલાં વિનેશ ફોગાટે Border Security Forceની ૨૬ વર્ષની Head Constable શિવાની પવાર (મધ્યપ્રદેશના સામાન્ય ખેડૂતની દીકરી) સાથે જેવું વર્તન કર્યું તેનો કેવો ઈશ્વરી ન્યાય મળ્યો તે જાણવા મળશે. શિવાની પોતે પણ એક પ્રસિદ્ધ કુસ્તીબાજ છે. World Wrestling Championshipમાં ૨૩ વર્ષની અંદરની ઉંમરની પ્રતિયોગિતામાં તેને Silver Medal પ્રાપ્ત થયો હતો. World Police Championshipમાં સુવર્ણચંદ્રક મળ્યો હતો અને Asian Championshipમાં કાંસાનો ચંદ્રક મળ્યો હતો, પરંતુ વિનેશની આડાઈની કારણે તેને Olympicમાં જવા દેવામાં નહીં આવી. આ આડાઈ કઈ પ્રકારની હતી?

૫૩ કિલોગ્રામની પ્રતિયોગિતામાં અંજુ નામની કુસ્તીબાજ સામે વિનેશ Olympic રમતની પ્રાથમિક પ્રતિયોગિતામાં ૧૦–૦થી ૧૬ જ સેકંડમાં તે ફેંકાઈ ગઈ હતી. તો પણ તેણે IOC (Indian Olympic Committee) સામે હોબાળો મચાવી ૫૦ કિલોગ્રામની પ્રતિયોગિતા માટે પોતાનું નામ નોંધાવી લીધું. ૫૩ કિલોની વિનેશે ૫૦ કિલોની શિવાની સામે ૧૦–૬થી જીત મેળવી અને તે રીતે પોતે Olympicની પ્રતિયોગિતા માટે સામેલ થઈ ગઈ. આમાં વજનમાં ત્રણ કિલોની ખાસ્સી એવી સરસાઈ હોવા છતાં તે શિવાની સામે માંડ માંડ જીતી હતી. પરંતુ તે હરિયાણાની જાટ હોવાથી અને નજીકના જ ભવિષ્યમાં હરિયાણામાં ચૂંટણી આવતી હોવાથી શિવાનીને બદલે વિનેશને Paris મોકલવામાં આવી અને શિવાનીને Border Security Forceની ફરજ પર મોકલી દેવામાં આવી. શિવાનીની ઉંમર અત્યારે ૨૬ વર્ષની છે, પણ ચાર વર્ષ પછી Los Angelesની Olympicમાં ૩૦ વર્ષની થઈ ગઈ હશે. તેથી તે કદાચ એ રમતમાં ભાગ લઈ નહીં શકે. આમ તેની કુસ્તીની કારકિર્દી પર વિનેશની આડાઈને કારણે કદાચ પૂર્ણવિરામ મૂકાઈ જશે. પરંતુ વિનેશે જેને માટે આટલો બધો હોબાળો મચાવ્યો તેમાં જ અંત સમયે પોતાનું વજન કાબુમાં રાખવા માટે અનેક ઉપાયો કર્યા હોવા છતાં પોતાના વજનને જ કારણે તેને બહાર ફેંકાઈ જવું પડ્યું અને દુનિયાની દૃષ્ટિએ તે હાસ્યાસ્પદ બની ગઈ!

વહાલા વાચકમિત્રો !

વિનેશને જે શિક્ષા કુદરતે આપી તે આપણે બરાબર ધ્યાનમાં રાખવા જેવી છે. આ લેખની શરૂઆતમાં જે ખેલદિલી અને નીતિમતાનો દાખલો અપાયો છે તેની સામે વિનેશનું વર્તન કેટલું બધું હાસ્યાસ્પદ અને મૂર્ખામીભર્યું લાગે છે. ગમે તેમ કરીને સુવર્ણપદકની લાલચ માટે થઈને તેણે નીતિમતાનાં ધોરણોની ઐસીતૈસી કરીને પ્રતિયોગિતા માટે પોતાનું નામ દાખલ તો કરાવી લીધું, પરંતુ તેનાં પોતાનાં જ આવાં વર્તનની ઈશ્વરે કેવી મોટી શિક્ષા આપી તેનો તેને વસવસો તો દિલમાં જરૂર હશે! બહારથી કદાચ તે હસતું મોઢું રાખી શકે, પરંતુ તેણે કરેલા આવા બેહુદા વર્તનથી તેની આજુબાજુના અને દુનિયાના કુસ્તીબાજો સામે તે જરૂર નાલેશીથી પસ્તાતી હશે.

હે વાચકમિત્રો!

આપણે કેવું અને કંઈ પ્રકારનું જીવન જીવવું છે તે ઉપરોક્ત દાખલા પરથી ખબર પડી જશે. આપણે ભવિષ્યની પેઢી માટે ખરેખર પ્રેરણાદાયી બનવું હશે તો આવી ક્ષુલ્લક, જાતને છેતરીને મેળવેલાં માન–સન્માન કે ઈલ્કાબોથી શું ખરેખર ભગવાન રાજી થશે? આપણે કદાચ મોટા હોઈશું કે વડીલ હોઈશું પરંતુ આપણી જોડેના આપણા સાથીદારો કે સેવકો કે ગરીબ પ્રકૃતિના હરિભક્તોની ઉપેક્ષા કરીને જો આગળ વધવાનો પ્રયત્ન કરીશું તો સમાજમાં આપણી વાહવાહ કદાચ જરૂર થશે, પરંતુ ઈશ્વરી ન્યાયની કચેરીમાં તો આપણે બહુ જ મોટા ગુનેગાર સાબિત થઈશું.

આપણા સંપ્રદાય અને સમાજમાં તો કેટલાંય પાત્રો છે કે જેમની સેવાભાવના, સમર્પણનો સ્વયં સ્વામિનારાયણ ભગવાને આદર કર્યો છે. મહારાજના વખતમાં દુબળી ભક્ત, રતનજી મિયાજી, સઘરામ વાઘરી જેવા કેટલાય સેવકો હતા અને આજે પણ એવા કેટલાય હરિભક્તો હશે કે જેઓ અંતરથી ગરીબ છતાં ખૂબ જ ઊંચી અમીરાત ધરાવતા આત્માઓ હશે. આપણે હંમેશાં આવા દેખંતી રીતે દેખાતા નાના હરિભક્તોનું સન્માન જાળવીએ, મહિમા સમજીએ અને તેમનાં જીવનમાંથી યત્કિંચિત્ પ્રેરણા મેળવીએ. બહુ બોલી બોલીને દેખાવ કરવા કરતાં આપણા વર્તનથી અન્યને પ્રેરણારૂપ બનીએ.

ગુરુહરિ પપ્પાજી કહેતા હતા તેમ "Speak less, work more, let your result speak for you." આ સૂત્રને આપણો જીવનમંત્ર બનાવીએ એ જ પપ્પાજીના ૧૦૮મા પ્રાગટ્યપર્વે (તા. ૧ સપ્ટેમ્બર, ૨૦૨૪) ભગવાન સ્વામિનારાયણ, ગુરુહરિ પપ્પાજી, ગુરુહરિ કાકાજી અને સર્વે ગુણાતીત સ્વરૂપોનાં ચરણે પ્રાર્થના.

॥ स्वामिश्रीजी ॥

रक्षाबंधन

'अक्षरधाम ' मंदिर
पवई, मुंबई

दि. १९ अगस्त, २०२४

परम भगवदीय,

'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई से सभी संतबहनों के रक्षाबंधन के शुभ पर्व पर सस्नेह जय श्री स्वामिनारायण...

हम सभी प्रगट के उपासक है... प्रत्यक्ष प्रभु का निरंतर अनुसंधान रखकर जीवन जी रहे है। स्थूल रक्षा तो प्रभु सहज ही कर रहे है।

तो गुणातीतानंदस्वामी की प्रकरण ७ की ३०वी बात के मुताबिक अब हम तीन देह से पर निजात्मानं ब्रह्मरुपं मानकर सुबह जल्दी उठकर प्रार्थना करें कि 'हे नाथ! हे दयासिंधो! हे कृपासिंधो! हे कलिदोषनिवारक! हे भक्तिधर्मात्मज! हे योगकलाप्रवर्तक! हे वर्णिवेषदर्शक! हे ब्रह्मविद्याप्रवर्तक! हे अधमोद्धारण! हे पतितपावन! हे अशरणशरण! हे अक्षरधामाधिपति! हे पूर्ण पुरुषोत्तमनारायण! हे सहजानंदस्वामी! आप मुझ पर राजी होकर, मुझे आपका एकांतिक दास जानकर मेरे हृदय में निरंतर निवास कर अखंड रहना!!!'

इस प्रकार नित्य प्रार्थना करें। जिससे हृदय में साक्षात श्री पुरुषोत्तमनारायण श्री सहजानंदस्वामी अखंड निवास करके रहे...

भगवान स्वामिनारायण, ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज, ब्र.स्व. योगीजी महाराज, गुरुहरि काकाजी महाराज और सभी गुणातीत स्वरुपों हमारे साथ ही है और अखंड रक्षा में ही है, ऐसी प्रार्थना के साथ महापूजा में प्रसादीभूत की गई यह रक्षा आपको भेज रहे है...

तो सभी सुखी रहो... स्वस्थ रहो... सुरक्षित रहो...

प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई और सभी संतभाईयों के आशीष और सभी संतबहनों की शुभेच्छा के साथ...

लि. आपके ही सभी संतबहनों की ओर से...
माधुरी और जयश्री के जय श्री स्वामिनारायण.

RNI Regn No : MAHMUL/2015/62272
Date of publication: 8th of every month
POSTED AT MUMBAI PATRIKA CHANNEL SORTING OFFICE MUMBAI 400001

Postal Regn No: MCW/329/2018-20
Date of posting:11th of every month

Summary of Events

1) Senior Police Inspector Shri. Sitaram Sonawneji at "Akshardham" Temple, Powai on 4th July. (2) P.P. Vashibhai's 72nd Pragatyadin celebrations at Megaragus Hall on 6th July. (3) Bhajan Sandhya on 7th July at Megaragus Hall. (4) Visit by Saint Brothers to Gujarat on 12th July. (4) Visit by P.P. Guruji and Saint Brothers to meet Shri. Niranjan Hiranandani on 15th July. (5) On the auspicious day of starting of Chaturmas P.P. Guruji and Groups at "Akshardham" Temple, Powai on 17th July. (6) Distribution of Mats at Govandi Municipal School by Yogi Divine Society, Sadbhav Foundation and Rotary Club on 20th July. (7) Breast Cancer Screening of Cancer Patients by Deepsikha Foundation on 20th July. (8) Guru Poornima celebration on 21st July at "Akshardham" Temple, Powai. (9) Visit by Saint Brothers to meet P. Satswamiji at Vile parle on 22nd July. (10) Special Hindola at "Akshardham" Temple, Powai on 22nd July. (11) P. Aanandswaroopswamiji, P. Viralswamiji and Devotees at "Akshardham" Temple, Powai on 23rd July. (12) Chicago Haridham temple Patotsav at Chicago on 23rd July. (13) Murtipratishtha of Columbus Temple on 26th July. (14) P.P. Vashibhai's Pragatyadin celebration at Sambhaji Nagar on 4th August. (15) Sambhaji Nagar Hari Mandir's 17th Patotsav on 5th August. (16) Blessings on the auspicious day of Gurupurnima by P.P. Bharatbhai on 21st July. (17) Homage to P. Aacharyaswamiji on his Akshardhamgaman on 18th July. (18) Article related to Paris Olympic Games.

Space for address

Space for franking

Printed Matter - Book Post

From

YOGI DIVINE SOCIETY
6D Sonawala Building, Tardeo,
Mumbai - 400 007 Tel: 2380 2527

'Akshardham' Swaminarayan Temple,
Near Hiranandani Hospital, Powai, Mumbai - 400 076
Tel: 2578 2151/2579 4314 Email: isrc@kakaji.org

Printed & Published by Bharat P Mehta on behalf of Yogi Divine Society & Printed at Jalaram Enterprise, Fairy Manor, 13, Rustom Sidhwa Marg (Gunbow Street), Fort, Mumbai - 400 001 & Published by Yogi Divine Society, 6D, Sonavala Building, 4th Floor, Tardeo, Mumbai - 400 007.

Editor: Bharat P Mehta